11-Aug-2019
Page 5
दैनिक भास्कर

भाषाओं को बचाने के लिए प्राथमिक शिक्षा मातृभाषा में जरूरीः के वासमल्ली

दो दिवसीय अखिल भारतीय आदिवासी लेखक उत्सव का समापन

भास्कर न्यूज | नई दिल्ली

अंतरराष्ट्रीय आदिवासी भाषा वर्ष पर साहित्य अकादमी की तरफ से आयोजित दो दिवसीय अखिल भारतीय आदिवासी लेखक उत्सव का शनिवार को समापन हुआ। भारत की आदिवासी भाषाएं:संरक्षण एवं पुनरोद्धार, कहानी एवं कविता-पाठ के सत्र हुए जिसकी अध्यक्षता के.वासमल्ली ने की।

यहां बताया गया कि तमिलनाडु की तोड़ा जनजाति की भाषा की वर्णमाला में 54 अक्षर हैं। इसे बोलने वाले बस 15000 लोग बचे हैं। धर्मेंद्र पारे ने बताया कि कोरकू भाषा को बोलने वाले मुंडा समुदाय के लोग मध्यप्रदेश और महाराष्ट्र में हैं। कोरकू का मतलब 'मनुष्य' है। इसकी कोई लिपि नहीं है और देवनागरी लिपि में लिखकर इसकी कुछ किताबें प्रकाशित की गई हैं। उन्होंने सुझाव दिया है कि मातृभाषा बचानी है तो प्रारंभिक शिक्षा कम से कम तीन वर्ष मातृभाषा में करवाएं। साहित्य अकादमी के उपाध्यक्ष माधव कौशिक ने समापन भाषण में कहा मातृभाषाएं केवल संवाद के लिए ही नहीं बल्कि हमारी संस्कृति के विकास के लिए भी बहुत आवश्यक हैं।इनके संरक्षण की बहुत आवश्यकता है।